रेणु के साहित्य में सामाजिक सरोकार और यथार्थ बोध

डॉ0 ऊषा तिवारी
विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
एम0डी0पी0जी0 कालेज
प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

अपने प्रथम उपन्यास "मैला आंचल" (1954) से भारतीय उपन्यास जगत् को चमत्कृत करने वाले कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्यिक कद इतना बड़ा है कि निर्मल वर्मा, अज्ञेय जैसे समर्थ रचनाकार उनसे सम्मोहित हो जाते हैं। किसान जीवन के महान् गाथाकार प्रेमचन्द्र के बाद शिवपूजन सहाय के उपन्यास 'देहाती दुनिया', शिव शंकर पिल्लै के उपन्यास 'मछुआरे' और गोपीनाथ मोहन्ती के उपन्यास 'माटी मराल' के मध्य 'मैला आंचल' अपनी विशिष्ट उपलब्धि दर्ज कराता है। स्थानिक सन्दर्भ 'अंचल विशेष' को भारतीय सन्दर्भ से जोड़ कर वस्तुगत, चरित्रगत, भाषागत जो सौन्दर्य रेणु जी ने सृजित किया, वह अपने आप में अपरूप है। हिन्दी भाषा

अपनी तत्समधर्मिता, षुचिता, शाब्दिक मायाजाल व उक्तिवैचित्रय के जिस भँवरजाल में फँसी छटपटा रही थी, उसे लोकभाषा की गंगा में स्नान करा लेखक ने पूतवान और सामथ्र्यवान बना दिया। प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र यादव दिसम्बर 2001 के प्रथम सप्ताह में पटना में आयोजित एक मेले के साक्षात्कार (बातचीत) में स्वीकारते हैं कि 'रेणु' को पढ़ते समय हमेशा यह पाता हूँ कि रेणु जैसे शब्दों को सुनते हैं, उनमें शब्दों की गंध से ज्यादा उसके स्वाद की पकड़ है .... वे शब्द लिखते नहीं, उसकी ध्वनिलिपि तैयार करते हैं .... पात्र के बहाने वे अपनी बात कहते हैं और उसी के आधार पर कहानी में ड्रामा पैदा होता है, एक अजीब तरह का! रेणु के कान, मेरा खयाल है- रेणु की सबसे बड़ी शक्ति है। संवाद से लेकर विवरण तक रेणु एक पेड़ का भी वर्णन करता है तो उसको सजगता से सुनता है।"[1]

गोदान में भी शहरी और ग्रामीण कथा का संयोग है और 'मैला आँचल' में भी। बिहार के पूर्णिया में घटित घटनाओं और पात्रों में भारतीय सन्दर्भों की अनुगूँज व्याप्त है। दो खण्डों में लिखे गये उपन्यास के दूसरे खण्ड में पन्द्रह तारीख को सुराज मिल जाने का संकेत है तो पहला खण्ड स्वाधीनता आन्दोलन के अन्तिम दौर का चित्रण है। मूलतः खण्ड-2 प्रसंगों की बनावट को अक्षुण्ण रखते हुये लिखा गया है। यह उपन्यास यथार्थवादी इतिवृत्ति के परिचित मॉडल को तोड़ कर लिखा गया। परमानन्द श्रीवास्तव अपनी पुस्तक 'उपन्यास का पुनर्जन्म' के मैला आंचल और भारतीय उपन्यास नामक लेख में लिखते हैं, "यहाँ यथार्थ के साथ जीवन के मूल

रस-राग-सौन्दर्य को आत्मसात् करने के लिए एक ढीला-ढाला कथात्मक ढाँचा खोज लिया गया है, इसी अर्थ में मैला आँचल भारतीय उपन्यास है।"[2] निर्मल वर्मा रेणु की औपन्यासिक कला का निरूपण करते हुये लिखते हैं, "उन्होने उपन्यास की नैरेटिव, कथात्मक परम्परा को तोड़ा था, उसके अलग-अलग एपीसोड में बाँटा था जिन्हे जोड़ने वाला धागा कथा का सूत्र नही," परिवेश का ऐसा लैण्डस्केप था जो अपनी आत्यन्तिक लय में परिस्थितियों को रूप और फार्म देता है।"[3] स्वातन्त्रयोत्तर भारत की नयी परिस्थितियों की उपज रेणु प्रेमचन्द्र के अधूरे गाँव को अपनी सांस्कृतिक लोकचेतना, लोकगीत और उत्सवधर्मिता से रमणीय और मोहक बना देते हैं। मैला आँचल के स्वतन्त्रता जुलूस में उभरा नारा 'यह आजादी झूँठी है' हिन्दी के आत्ममुग्ध लेखकों, कवियों और नाटककारों को स्वरचित साहित्य के प्रति चैकन्ना कर देती है। रेणु शहरी संसार के प्रति उपजे आकर्षण के विपरीत साहित्य को लोकचिंता से जोड़ने का कार्य करते हैं। मैला आँचल की शीर्षकहीन संक्षिप्त भूमिका में रेणु जी लिखते हैं, "इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी हैं, गुलाल भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी," 'मै किसी से दामन बचाकर निकल नही पाया।' दुर्लभ सामग्रिक वैशिष्ट्य से पूरित उपन्यास की कथावस्तु में सुसंबद्ध स्थापत्य, आत्मीयतापूर्ण परकायाप्रवेश वाली एकांतिक तटस्थता और कलाकारोचित प्रतिभा से रेणु के पात्र विशिष्ट अभिजात्य प्राप्त कर लेते हैं और जातीय संभावनाओं के प्रतीक बन जाते हैं। स्वतन्त्रता संघर्ष और जनान्दोलन, नेपाल की राजशाही के विरूद्ध मुक्ति

संघर्ष, किसान और भूमिहीन आन्दोलनों की सक्रिय सहभागिता रेणु के लेखकीय मानस निर्मिति को ऊष्मा और ताप प्रदान करती है। अंधविश्वास, अनास्था और अविश्वास के बीच रेणु जी ने गाँव की भूख, गरीबी और बदहाली को अपनी आँखों के कैमरे में कैद किया और अपनी निर्मल स्नेहसिक्त करुणाधारा की उतरायी हुयी बाढ़ में डुबो दिया। शरत् के पल्ली समाज में गाँव का जो मटमैला यथार्थ चित्रित हुआ, उसने रेणु को सहानभूति से भर दिया। बेलौस और निर्मम भाव से वे ऐसी विलक्षण संवेदनशीलता पाठक में जगाते हैं कि अज्ञेय को रेणु के विषय में लिखना पड़ता है, "वह वेपनाह कारुण्य हमें रेणु की सृष्टियों में मिलता है, यह उनका सबसे बड़ा गुण है और इसी के कारण वे समाज के हर वर्ग के अपने लेखक हैं, उनके भी जो रेणु के चरित्रों के दुःख दर्द के साथ पसीज उठते हैं और उनके भी जो रेणु की भाषा के निरंकुश, रंगीन और अनपढ़पन पर खीजते हैं, झल्ला उठते हैं और इस गुण को और भी गुणवत्ता दे देता है उस कारुण्य में विनोद का पुट, यह उस करुणा को भावुकता से बचा लेता है और बोझीली दया भी (भगवान हमें दया से बचा)। रेणु की कृतियों का प्रिय क्षेत्र कोसी नदी का क्षेत्र है। उस नदी को रूपक का आधार बनाकर वे कहें कि कोसी की बाढ़ की तरह रेणु की करूणा उमड़ती है और बाढ़ उतरने पर छोड़ दिये गये असंख्य जलकोषों की भाँति वह करूणा सलिल विनोद के सरोवरों में निथुरता बनी रहती है। बाढ़ का पानी तो पानी है निथुरता जल सलिल है, जीवन है।"[4]

आजाद भारत में परमाणु ऊर्जा आयोग का गठन 1948,

बहुउद्देश्यीय नदी घाटी योजनाओं का आरम्भ 1949, भारतीय संविधान का क्रियान्वयन 1950, जमींदारी प्रथा की समाप्ति 1951, प्रथम आम चुनव 1951-52, सामुदायिक विकास कार्यक्रम का प्रारम्भ 1952, चकबन्दी योजना 1953 आदि विकास की पुनर्निर्माणकारी योजनाओं को समारोहवत् गाँवों में लागू किया गया। सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन की इन लहरों की अनुगूँज गाँवों को बदलने व गरीबों को न्याय दिलने में कहाँ तक सक्षम हुयी, इसकी यथार्थ पड़ताल रेणु जी अपने उपन्यासों में करते दिखायी देते हैं, "मेरीगंज गाँव के मजदूरों की मजदूरी सवा रूपये रोज है जिसमें एक व्यक्ति का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले पाँच आने मिलते थे और उसी में घर भर के लोग खाते थे।"[5] वे आगे लिखते हैं, "कपड़े के अभाव में अर्द्धनग्र रहने को मजबूर औरत का आंगन में काम करते समय एक कपड़ा लपेट कर काम चलाना, बारह वर्ष की उम्र तक बच्चों का नग्र ही रहना, मात्र दो रूपये की मजदूरी के लिए गाँव छोड़ कर जूट मिलों की ओर मजदूरों का भागना ग्रामीण जीवन का यथार्थ है।'[6] सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से रेणु ने ग्रामीण सच्चाइयों को देखा, परखा और अपने उपन्यासों में व्यक्त किया। प्रजातांत्रिक चेतना का ग्राम्य चेतना में रूपान्तरण, उसके प्रभाव और परिणिति को रेणु जी अपनी भावक चेतना से संयुक्तकर पूरी संवेदना और सहानुभूति से चित्रित करते हैं। मैला आंचल का डाक्टर प्रशान्त परती परिकथा का जितेन्द्र, दीर्घतपा की बेला गुप्ता, जुलूस की पवित्रा ऐसे अनुपम चरित्र हैं जो भारत की आजादी को सही मायने

में गाँव तक पहुँचाना चाहते हैं। 15 अगस्त के दिन गरीब संथालों का कालापानी की काली छाया के नीचे उन्मत्त होकर नाचना एक ऐसा मनोवैज्ञानिक चित्र है जो समाज के विद्रूप व्यंग्य को उजागर करता है। डॉ0 विवेकी राय 'समकालीन उपन्यास' नामक अपनी पुस्तक में लिखते हैं, "गाँव और नगर को छोड़कर युग परिवर्तन की स्थितियों की यथावत् पकड़ के लिए रेणु ने आंचलिक इकाई का चुनाव किया है और इससे बिखरी मानसिकता, बिखरे सामाजिक जीवन के अनुरूप वैविध्यपूर्ण पृष्ठभूमि सहज रूप में उपलब्ध हो गयी। तराश, कसावमूलक, परंपरित, एकोन्मुखी शिल्प के परित्याग और जिये जाते जीवन और उसकी प्रामाणिक अनुभूति के सीधे अनौपचारिक ग्रहण में सर्वथा नवीन और जीवन्त आँचलिक शिल्प की बहुत गहरी नींव मैला आँचल में पड़ती दृष्टिगोचर होती है। फिर 'परती परिकथा' (959) में यह शिल्प पूर्णता के शिखर पर होता है। स्वतन्त्र्योत्तर प्रजातान्त्रिक चेतना की स्वर लिपि बनकर आंचलिकता हिन्दी उपन्यास साहित्य में बहुत ठीक समय से उतरती है। इसमें निहित स्वाधीन जाति का संगीत वास्तव में पहली बार इतनी ऊर्जा, इतनी भूसंपत्ति और इतनी रागमयता के साथ प्रस्तुत होता है तथा इतनी जीवनवादी स्वच्छन्दता के साथ पूर्ण होता है।"[7]

नलिन विलोचन शर्मा मैला आंचल को हिन्दी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों में गिनते हैं तो स्थापना भी करते हैं, "बिना किसी प्रचार या विज्ञापन के ही मैला आँचल हिन्दी के उस विस्तृत क्षेत्र में तत्क्षण प्रसिद्ध हो गया। शायद ही कोई पुस्तक इतनी शीघ्र ज्ञात होती है। मैने

इसे गोदान के बाद हिन्दी का वैसा दूसरा उपन्यास माना है।'[8]

राजनैतिक चेतना कृति को विशिष्ट बना देती है। जीवन की विशालता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक आस्थाओं के साथ आर्थिक, नैतिक और मानवीय मूल्य राष्ट्र की विशिष्टता को बढ़ाते हैं। अधिकारों की सुरक्षा, स्वस्थ प्रशासन, व्यक्ति में अन्तर्निहित संभावनाओं का विकास किसी प्रवुद्ध राष्ट्र की मांग होती है। गुटबाजी, षड़यन्त्र, भ्रष्ट व्यवस्था राजनीति के अवगुण हैं। रेणु जी अपनी तीसरी आँख से व्यवस्था की परतों को खोलते हैं। समाज सेवा, राष्ट्रसेवा, धर्मसेवा के नाम पर धनलोलुपता, स्वार्थी, कामुक चेहरों को वे अपने उपन्यासों में बेनकाब करते हैं। गांधीवादी वस्त्रों में गाँव की भोली भाली जनता को मूर्ख बनाने वाला बालदेव ऐसा ही चरित्र है। कपड़े, चीनी और किरासिन तेल का परमिट बाँटने और ब्लैक करने में व्यस्त बालदेव को किसानों की सजगता के कारण मुर्दा होकर होकर जीना पड़ता है," अब उसको पूँछता कौन है? उसको एक बच्चा भी मुह नही लगाता। कांगरेस में भी उसकी बदनामी हो गयी है।"[9] 'जमीन किसकी' के उत्तर में सोसलिस्ट पार्टी का नेता कालीचरन कहता है 'जोत जिसकी जमीन उसकी'। उसकी यह घोषणा किसान सभा के मेहनती संथालों को उत्साह से भर देती है। शहर से आये सोसलिस्ट सैनिक सभा में बोल रहे हैं,' यह जो लाल झण्डा है, आपका झण्डा है इसकी लाली, इसका रंग क्या है? ... रंग नही! यह गरीबों, महरूमों, मजलूमों, मजबूरों, मजदूरों के खून में रंगा हुआ झण्डा है। .... जिस तरह सूरज का डूबना एक महान सच है, पूँजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है। मिलों की चिमनियाँ आग

उगलेंगी और उन पर मजदूरों का कब्जा होगा, जमीनों पर किसानों का कब्जा होगा। चारों ओर लाल धुंआ मँडरा रहा है। उट्ठो किसानों के सच्चे सपूतों! धरती के सच्चे मिलमालिकों, उट्ठो! क्रान्ति की मशाल लेकर आगे बढ़ो।"[10] न्याय से वंचित संथालों और किसानों के मन में यह चेतना वर्ग संघर्ष के रूप में विकसित होती दिखायी देती है जिसका प्रतिनिधित्व वासुदेव और कालीचरन जैसे कार्यकर्ता करते दिखाई देते हैं। विश्वनाथ मलिक परिस्थितियों को भाँपकर ही प्रत्येक परिवार को पाँच बीघा जमीन लौटने का विचार करते हैं। किसान और श्रमिकों में संघर्ष भाव-चित्रण, मनीषियों सच्चे समाजसेवियों तथा मानवीय संवेदना से युक्त चरित्रों के माध्यम से परिवर्तित गाँवों का चित्रण रेणु जी ने बखूबी किया है। उनकी अन्वेषणपरक यह मुद्रा हिन्दी कथा सहित्य में युगान्तर उपस्थित करती है। मेरीगंज के जुलूस के नारे में इंकलाब जिन्दाबाद को 'इनकिलास जिन्दाबाघ' और इसका अर्थ 'हम जिन्दा बाघ है' लिया गया जो तत्कालीन भाारतीय राजनीति के वास्तविक स्वरूप का साक्षात्कार कराती है । जातिगत वैमनस्य के राजनैतिक फार्मूले की सच्चाई की सच्चाई का चित्रण रेणु जी गांव के जातिगत टोलों की मानसिकता के माध्यम से करते हैं। वे मेरीगंज की पोलिया टोली,ततमा टोली,यदुवंशी क्षत्रिय टोली, कुर्मी क्षत्रिय टोली, धनुकधारी क्षत्रिय टोली, कुशवाहा क्षत्रिय टोली, और इसी प्रकार अमात्य ब्राम्हण, रैदास, गुआर, सिपैहिया तथा कायस्थों की मलिक टोली के परम्परागत, पुरातनपंथी, अंधविश्वास, रूढियों, वर्जनाओं के साथ मलेरिया सेंटर, काली टोपी सेंटर, चरखा सेंटर की गतिविधियों

का चित्रण नये संघर्षों की गहमागहमी दिखाने के लिए करते हैं। गांव वालों के शहरी रोमानी सपनों में पल रहे नागरबोध के द्वंद्व को रेणु जी गहराई से पकडते हैं। वे लिखते हैं कि शहर की बात निराली है,शहर की हवा लगते ही आदमी बदल जाता है। शहर से गांव आकर बसा डा प्रशांत गांव के बदलते रिश्तों की सच्चाई पहचान रहा है, “आज हर आदमी के अंदर का भूखा टामी अधीर हो चुका है.....काले बाजार के अंधेरे में एक नयी दुनिया की सृष्टि हो गयी है। इस दुनिया में माँ-बेटा, पिता-पुत्र, भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसे कोई सम्बध नहीं।”[11] गांव की नैतिकता के उखड़ते खेमों का चित्र इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है, “कमली शाम से आधी रात तक डाक्टर बाबू के घर में बैठी है। तहसीलदार हरगौरी सिंह मौसेरी बहन से फँसा हुआ है। बालदेव कोठारिन से लटपटा गये हैं। काली चरण ने स्कूल की मास्टरनी को घर में रख लिया है।‘[12] ‘आर्थिक और सामाजिक बदलाव के तहत छोटे लोग काम बन्द कर अपना विरोध प्रकट कर रहे हैं। जातिवाद ने लोगों को और अधिक जकड दिया है। गरीबी और जेहालत राष्ट्रीय रोग बन चुके है। संथालों को लाठी के बल पर बेदखल किया जाता है। गांधी जी के साथ काली माई की भी जय बोली जाती है। समाज सेवक बालदेव भोगी और बैरागी होकर गांव के लिए बेकार हो जाता है। डॉ0 राम दरश मिश्र मैला आंचल के सौंदर्य और शक्ति का रहस्य उसकी सांकेतिक व व्यंग्यात्मक शैली को मानते हैं। वर्णनात्मक और व्यंग्यात्मक शैलियों के साथ अन्य शैलियों का मिश्रण उपन्यास में चमत्कार पैदा करता है। डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय मैला आँचल में

मुख्य रूप से चार विशेषताएँ देखते हैं, “पहली विशेषता है उसकी तटस्थता। दूसरी विशेषता यह कि आंचलिक होकर भी उसमे व्यापक राष्ट्रीय सन्दर्भों को समेटा गया है। तीसरी विशेषता यह कि समस्या और व्यक्ति दोनों को उठाया गया है जबकि प्रेमचन्द्र ने समस्या को उठाया है। चैथी विशेषता यह है कि अनैतिकता के व्यापक चित्र मे परानैतिक मूल्यों की स्थापना का संकेत रेणु ने दिया हैं।’[13] डॉ0 बच्चन सिंह ‘हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास’ में लिखते हैं, “कथा साहित्य में अंचल विशेष की जेहालत, अंधविश्वास, भोलापन, तिकड़म, माटी की महक, लोक संस्कृति,गाँव की बोली बानी को जिस समग्रता में साकार किया गया है, वह अद्वितीय है।”[14] विविध साहित्यिक आन्दोलनों से अलग रह रेणु ने गाँव को अपने साहित्य में जो प्रामाणिकता दी, वह आम आदमी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है । डॉ0 कुसुम राय लिखती हैं, “रेणु अपने साहित्य में मनुष्य के भीतर से मनुष्यता की गंध को ढूँढ़ते नजर आये हैं। अमानवीय होते जा रहे समाज में मानवीय सरोकारों और मानवीय ऊर्जा की तलाश करते नजर आते हैं तथा नीरसता मे सरसता की खोज करते हैं। इस कोशिश में वे लोकजीवन और लोक संस्कृति से जुड़ते हैं। उनका कथा साहित्य लोक जीवन की सम्पन्नता और सांस्कृतिक समृद्धि को साथ लेकर चलता है।”[15] ‘मालिक आज माफ करो’ कविता में रेणु जी नारियल, सुपारी और बाँस की फुनगियों पर आयी पछिया हवा के साथ घर में रखा डेढ़ सेर चावल, पिछवाड़े का कद्दू, दो जीवा घरवाली की मछली खाने की साध के प्रति मजदूर के समर्पण को आज का काम

स्थगित करवाकर पूर्ण करते हैं। दलित विमर्श के विचारकों की भाँति वह मजदूर भी चिन्तन करता है, वह रामचरित मानस के प्रति अपने भाव को निम्न शब्दों में प्रकट करता है -

बाबा रामचंदर
भगवान थे
हम दास हैं, सेवक हैं
हमारी स्त्रियाँ सोने के हिरण
की खाल खिंचवाकर नही मँगवायेंगी।"[16]

रेणु के साहित्य के प्राणतत्त्व गप्प, मन को रसाने वाले भेद, लोकवार्ता के रस और किस्सागोई शैली में लोकजीवन का चित्रण हैं। लोक और लोक कथाएँ ग्राम्य जीवन को आर्द्र रखने वाले सांस्कृतिक स्रोत हैं। पर्वों, मेलों व त्योहारों के साथ जुड़े होली, जोगीड़ा, मँड़ौवा, चैता, निर्गुनिया, नौटंकी और विदेसिया नाच गाँव के आहत मन को संजीवनी प्रदान करते हैं । अपने पात्रों की निर्मिति के साथ पशु पक्षियों, नदी-नालों, वृक्षों-वनस्पतियों आदि को रेणु जी अपनी पूरी संवेदना प्रदान करते हैं। अपनी कहानियों के बारे में वे लिखते हैं, "साहित्य के राजदार पंडित, कथाकार, आलोचकों ने हमेशा नाराज होकर मुझे एक जीवन दर्शनहीन, अपदार्थ, अप्रतिबिद्ध, व्यर्थ, रोमाण्टिक प्राणी प्रमाणित किया है .... सारे तालाब को गन्दा करने वाला जीव। इसके बावजूद कभी मुझसे इससे ज्यादा नही बोला गया कि अपनी कहानियों में मै अपने को ढूंढ़ता फिरता हूँ। अपने अर्थात् आदमी को।"[17]

रेणु के साहित्य के प्रशंसकों की लम्बी सूची है। यशपाल, अज्ञेय, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, राम दरश मिश्र, प्रभृत हस्ताक्षर उन्हे एक श्रेष्ठ कथाकार मानते हैं। आत्मानुसंधान में रेणु जी ने उपन्यास, कहानी के अतिरिक्त रिपोर्ताज, संस्मरण-स्केच-साक्षात्कार, हास्य-व्यंग, पत्र, डायरी, फिल्मी पटकथा, अनुवाद, टिप्पणी और गद्यगीत भी लिखे। उन्होंने अपने नाटकीय और करिश्माई अंदाज से साहित्य के अमर पात्रों का सृजन किया और 'जुलूस' उपन्यास की पवित्रा की तरह लोकसंस्कृति मूलक समाज के गठन के लिए स्वयं को समाज में विलीन कर दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *परिषद् पत्रिका, फणीश्वर नाथ रेणु विशेषांक जुलाई-दिसम्बर 2001*
2. *उपन्यास का पुनर्जन्म - परमानन्द श्रीवास्तव पृ0 55*
3. *शताब्दी के ढलते वर्षों में - निर्मल वर्मा पृ0 360*
4. *धरती का धनी अज्ञेय - (नागार्जुन/रेणुः संस्मरण और श्रद्धांजलि) पुस्तक से साभार*
5. *मैला आँचल - पृ0 25*
6. *मैला आंचल पृष्ठ 320*
7. *समकालीन हिन्दी उपन्यास - विवेकी राय, पृष्ठ 51*
8. *आलोचना ... 15, पृष्ठ 105-106*
9. *मैला आँचल, पृ0 71*
10. *मैला आँचल, पृ0 109*

11. *मैला आँचल, 189*

12. *मैला आँचल, पृ0 120*

13. *समकालीन हिन्दी उपन्यास - विवेकी राय, पृ0 59*

14. *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ0 बच्चन सिंह, पृ0 516*

15. *हिन्दी के निर्माता - कुसुम राय, पृ0 379*

16. *सारिका, रेणु स्मृति अंक - अप्रैल 1979*

17. *हिन्दी गद्य साहित्य - डॉ0 राम चन्द्र तिवारी, पृ0 85*